हमारे सात आंदोलन

साधना आंदोलन

आंदोलन की आवश्यकता एवं रूपरेखा

पिछले हजार वर्षों से जिस अज्ञानांधकार युग में हमें रहना पड़ा है, उसके फलस्वरूप हमारे चिंतन की दिशा में विकृतियों की मात्रा इतनी बढ़ गई कि प्रगति के लिए किए गए सभी प्रयत्न उलटे पड़ते हैं। सुधार एवं प्रगति की सभी योजनाएँ चारित्रिक दुर्बलता से टकराकर निष्फल हो जाती हैं। कारण की तह तक हमें जाना होगा और भावनात्मक नवनिर्माण के लिए एक ऐसा प्रचंड अभियान चलाना होगा, जो जनमानस को चरित्रनिष्ठा, आदर्शवादिता, मानवीय सद्‌भावना, प्रचंड कर्मठता और औचित्य को अपनाने की साहसिकता से ओतप्रोत कर दें। इस आंदोलन को जितनी सफलता मिलती जाएगी, उसी क्रम से प्रगति का पथ प्रशस्त होता चला जाएगा।

आंदोलन का अंतिम चरण संघर्षात्मक होगा, क्योंकि असुरता केवल अनुरोध एवं विनय से मिटने वाली नहीं है। उसके लिए पग-पग पर लड़े जाने वाले संघर्ष की आवश्यकता पड़ेगी। व्यक्तिगत तृष्णा, वासना, संकीर्णता, स्वार्थपरता, विलासिता, कामचोरी और अशिष्टता जैसी बुराइयों से आत्मसुधार एवं आत्मनिर्माण के आत्म-साधना स्तर पर लड़ा जाएगा। व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व स्तर की विकृतियों से उसी स्तर के हथियारों से लड़ा जाएगा। समग्र परिवर्तन का उद्‌देश्य लेकर प्रारंभ किया गया, युग निर्माण आंदोलन अब संघर्षात्मक कार्यक्रमों तक आ पहुँचा है। यह इस आंदोलन का अंतिम चरण है, जिसमें समग्र परिवर्तन की सुनिश्चित संभावनाएँ विद्यमान हैं। इन आंदोलनों की संक्षिप्त जानकारी यहाँ प्रस्तुत है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आंदोलनों की धुरी—

साधना सभी आंदोलनों की धुरी है। युग निर्माण मिशन का शुभारंभ साधना से ही हुआ। सच्चा साधक सही अर्थों में आंदोलनकारी हो सकता है। बिना साधना के आंदोलन में भाग लेने वाला थोड़ी कठिनाई आने पर फिसल जाता है, मार्ग से भटक जाता है और आंदोलन छोड़ बैठता है। अतः सभी आंदोलनों की सफलता साधना आंदोलन की सफलता पर निर्भर करती है।

साधना का स्वरूप—

वस्तुतः यहाँ साधना का तात्पर्य जीवन साधना से है, जो व्यापक अर्थों वाला शब्द है। जीवन साधना शब्द में उपासना, साधना, आराधना नाम की तीन क्रियाएँ समाई हुई हैं। इन तीनों को साधने में लग जाएँ, तो उसे साधना करना कहते हैं। इसी बात को विस्तार में इस प्रकार कह लें कि—

यदि आप साधना करना चाहते हैं तो—

१. आप उपासना अपने इष्ट देव की करें।

अर्थात—इष्टदेव का सुमिरन इस प्रकार करें कि (अ) आपको उनकी निकटता का अनुमान-आभास होने लगे, (ब) उनकी सर्वोपरि सत्ता और अपनी लघुता में विश्वास होने लगे और (स) कर्मफल के नियम में आस्था परिपक्व होने लगे।

देश-धर्म-संस्कृति के भिन्न होने के कारण उपासना करने के तरीकों में भिन्नता होना स्वाभाविक है, इसे स्वीकार करना चाहिए, किंतु आस्तिकता के उपयुक्त तीन लक्षण प्रत्येक उपासक में अवश्य ही विकसित होने चाहिए। ये लक्षण देशादि के बंधनों से परे हैं। हमारा उद्देश्य किसी मंत्र या पद्धति विशेष का प्रचार करना नहीं है। हमारा विश्वव्यापी लक्ष्य आस्तिकता-संवर्द्धन है।

२. आप साधना अपने व्यक्तिगत जीवन की करें।

अर्थात—अपने मन में उठने वाले विचारों को, हृदय में उठने वाली इच्छाओं और भावनाओं को तथा शरीर पर होने वाली क्रियाओं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व कर्मों को मर्यादा में रखने और प्रभावी बनाने का अभ्यास करें। स्वाध्याय और संयम का उपयोग करते हुए इन विचारों, इच्छाओं एवं भावनाओं को ऐसा साधने का निरंतर प्रयास करें कि आप एक श्रेष्ठ और संस्कारवान व्यक्ति के रूप में उभरने लगें।

मनुष्य के रहन-सहन के ढंग और धर्म-संप्रदाय या पंथ भिन्न हो सकते हैं, किंतु मानव जीवन को जीने के ईश्वर ने जो नियम और मानदंड निर्धारित किए हैं, वे सार्वभौमिक हैं। सभी धर्मों में उल्लखित हैं, इसलिए सभी मनुष्यों पर समान रूप से लागू होते हैं। प्रत्येक मनष्य इन ईश्वरीय आज्ञाओं से अवगत हो और इसके अनुसार जीवन जीने की प्रेरणा पा सके, ऐसी व्यवस्था बनाना और कार्यान्वित करना, इस आंदोलन का दूसरा महत्त्वपूर्ण चरण है। साधना आंदोलन का प्राण इस दूसरे चरण में ही बसता है। इसे जीवन साधना अथवा जीवन योग की साधना नाम से भी संबोधित किया जाता है। जिसका उद्देश्य है, मानव शरीर में दैवी गुणों को स्थापित और विकसित करना। पूज्य गुरुदेव ने इसे ही 'मनुष्य में देवत्व का उदय' की संज्ञा दी है।

३. आप आराधना मानव की करें।

अर्थात—अपने इस विश्व को आप सुघड़ और सुंदर बनाने की प्रतिदिन आराधना करें। इस हेतु अपनी योग्यता, श्रम और समय लगाने के लिए आप अपने को भी निरंतर समझाते, मनाते और प्रेरित करते रहें।

अध्यात्मपथ के राही के लिए एक कार्य अति आवश्यक है। अपनी विभूतियों का एक अंश दूसरों को आस्तिक और संस्कारवान बनाने में लगाना। यह विश्वमानव की अर्थात विराट रूप में इष्टदेव की सर्वोत्तम आराधना-सेवा है। प्रभु की ओर ले जाने वाले उज्ज्वल मार्ग से जो भटक गए हैं, उन्हें तो वही राह दिखाएगा न ! जो स्वयं उस राह पर चल रहा है। उनके विचारों को, जीवन-व्यवहारों को आप सही दिशा की ओर मोड़ सकें, उनके व्यक्तिगत एवं पारिवारिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन में स्नेह, सहयोग, सौम्यता के भाव जगा सकें, इससे अधिक श्रेष्ठ कोई प्रभु सेवा नहीं है। विश्व में शांति, सहयोग और भाईचारा बढ़ाने का यही एकमात्र स्थायी उपाय है। सबके लिए तो मुक्ति का मार्ग ही यही है।

४. बेहतर इनसान बनिए—बेहतर इनसान बनाइए।

आत्मीयता युक्त उपासना कीजिए। विचार-व्यवहारों को मर्यादा में रखिए, उत्कृष्ट बनाइए। ये प्रेरणाएँ दूसरों को भी नित्य दीजिए और उन्हें आगे बढ़ाने में सहायक बनिए।

हमारे प्रत्येक निष्ठावान पाठक को इस कार्यक्रम के व्यावहारिक पदों को विस्तार से समझने और उपयोगी विधियों को जानने की आवश्यकता है। अतः आवश्यकतानुसार उपयुक्त मार्गदर्शक पुस्तकों का प्रकाशन शांतिकुंज, हरिद्वार से होता रहेगा। ऐसी ही एक पुस्तक "सबके लिए सुलभ उपासना-साधना" का हिंदी एवं गुजराती भाषा में प्रकाशन अभी-अभी किया गया है। यह पुस्तक सभी साधकों और साधना आंदोलन के कार्यकर्त्ताओं को इसे पर्याप्त संख्या में मँगवाकर वितरित करना चाहिए। अन्य भाषाओं में भी इसके अनुवाद तथा प्रकाशन की व्यवस्था की गई है।

साधना से उभरे परिष्कृत एवं तेजस्वी व्यक्तित्व और सृजनशील संगठन समय की हर आवश्यकता को समय पर पूरी करने में समर्थ होंगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वास्थ्य आंदोलन

मिशन के मूलभूत सिद्धांत ''स्वस्थ शरीर, स्वच्छ मन, सभ्य समाज बनाएँगे'', पर आधारित यह आंदोलन प्रत्येक नागरिक को उन्हीं के संसाधनों के अंतर्गत स्वस्थ जीवन जीने के सूत्र प्रदान करेगा।

इस संदर्भ में आहार-विहार, रहन-सहन, सफाई-व्यायाम, निरापद जड़ी-बूटियों से उपचार, ऋतु पदार्थों का सेवन, मसाला-वाटिका आदि के लिए लोकशिक्षण में भावभरे प्रयास करने की आवश्यकता है, ताकि सर्वसाधारण को नीरोग रहने के आधार समझने का अवसर मिले और बीमार पड़ने का संकट ही सामने न आए। इस संदर्भ में शरीर संरचना, संतुलित आहार, रोगी परिचर्या एवं वनौषधियों संबंधी सभी आवश्यक जानकारी जानना आवश्यक है।

जो चारपाई पकड़ लें या दूसरों की सहायता के बिना काम न चला सकें, केवल उन्हीं को रुग्ण न मानें। रोगी उन्हें भी माना जाना चाहिए, जिनको अपच, थकान, निद्रा की कमी, बदन का दरद जैसी व्यथाएँ घेरे रहती हैं।

ज्यादातर रोग अपनी ही अव्यवस्था और असंयम से जन्म लेते हैं। यदि समय रहते इन्हें न सुधारा गया, तो अधिक असमर्थ बनाने वाली रुग्णता आ घेरती है। "Prevention is better than cure." सतर्कता संकट आने से पूर्व बरती जानी चाहिए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक तीनों ही स्तर पर जनमानस के समग्र उपचार का निदान ढूँढ़ा जाना चाहिए।

कुछ रोग ऐसे हैं, जो शारीरिक रूप से दिखाई देते हैं जैसे— शरीर की निर्बलता, खाँसी, श्वांस की तकलीफ, शरीर की सूजन, जोड़ों की सूजन इत्यादि।

मानसिक रोगों में तनाव, आक्रोश, चिंता, निराशा, सनक आदि आते हैं। इस प्रकार के रोगी प्रायः अधिक संख्या में हैं। इनको मार्गदर्शन की जरूरत रहती है, क्योंकि शरीर को रोगग्रस्त करने और स्वास्थ्य को हानि पहुँचाने वाले कारणों में एक प्रमुख कारण मानसिक तनाव है।

सामाजिक रुग्णता के अंतर्गत द्वेष, दुर्भाव, कलह-विग्रह, शोषण, अनाचार, अवांछनीयताएँ, भ्रांतियाँ इत्यादि आते हैं, इन्हें दूसरे आंदोलन दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन के अंतर्गत लिया गया है।

सामान्य रोगों में घरेलू उपचार किस प्रकार से लाभप्रद हो सकता है? इसकी जानकारी बहुत उपयोगी हो सकती है। जो मसाले, शाक-सब्जी में जीभ का स्वाद बढ़ाते हैं, वह सामान्य रोगों में कितने उपयोगी हैं, इसकी जानकारी जन-जन तक पहुँचानी चाहिए।

जो सर्वथा हानिरहित है, इस प्रकार की वनौषधियों का उपयोग सामान्य रोगों के निवारण में अति उपयोगी सिद्ध होता है। इनकी उपयोगिता एवं सेवनविधि के संबंध में आयुर्वेद तथा आधुनिक ग्रंथों में लंबा विवेचन एवं विश्लेषण दिया गया है, जो पढ़ा जा सकता है।

प्रत्येक प्रज्ञा संस्थान के पास एक वनौषधि डिस्पेंसरी हो, जिसके माध्यम से घर-घर पहुँचने और जन-जन से संपर्क साधने में सफलता मिलने में कोई शंका नहीं रहे।

इसमें स्काउटिंग, फर्स्टएड, रोगी परिचर्या, आहार क्रांति, हाइजीन इत्यादि का भी प्रारंभिक ज्ञान आवश्यक है। इसके लिए अनेक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकार के चार्ट्स, मॉडल्स "स्वास्थ्य संरक्षकों" के लिए उपयोगी हो सकते हैं।

क्या खाएँ, कैसे खाएँ? इसकी जानकारी कितनों को है, इसके अभाव में रोग बढ़ते जा रहे हैं। समस्त रोगों की जड़ पेट है। इस संदर्भ में कुछ जानकारियाँ आवश्यक हैं, जैसे अति भोजन की हानिकारक प्रवृत्ति, शक्ति और पौष्टिकता का झूठा भ्रम, अस्वाभाविक भोजन, भोजन के सत्व को सुरक्षित रखना, भोजन का उचित परिमाण, भोजन में आध्यात्मिक भावना एवं खाद्य पदार्थों की बरबादी इत्यादि।

हमें विषमाशन (वक्त, बेवक्त का भोजन) अध्याशन (बिना हजम हुए फिर से खाना) और समशन (अहितकारी पदार्थों का एक साथ सेवन) से बचना चाहिए।

शरीर बलवान हो इसके लिए आहार आदि के साथ श्रम भी आवश्यक है, इसकी उपेक्षा करने से अनेक रोग एक साथ आ घेरते हैं, इसके लिए नियमित व्यायाम की आवश्यकता है। इसके कुछ सूत्र हैं—खेलकूद, टहलना, आसन और प्राणायाम, लाठी चलाना, बागवानी, चक्की चलाना, महिलाओं के घरेलू व्यायाम।

जितने उत्साह और दृढ़संकल्प के साथ इस आंदोलन की घोषणा की है और चलाने का अभूतपूर्व उत्साह है, उसका मूल उद्देश्य है—जन-जन तक स्वास्थ्य रक्षा का संदेश पहुँचाना, जन चेतना को जगाना और संव्याप्त रुग्णता को मिटाना। सभी का सहयोग इस पुनीत आंदोलन के लिए अपेक्षित है।

हमें क्या करना होगा?

* स्वस्थ रहने के लिए सात्विक और परिश्रम की कमाई का ही भोजन ग्रहण करें।
* मांसाहार को त्यागकर शाकाहार को अपना आहार बनाएँ।
* प्रकृति के साथ सर्वदा सहयोग करें अर्थात प्राकृतिक नियमों का पालन करें।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

* व्यायाम को जीवन की अनिवार्य आवश्यकता बनाएँ।
* ऋतु के अनुसार ही पदार्थों का सेवन करें।
* शारीरिक सफाई के साथ स्थान तथा गाँवों की सफाई का भी ध्यान रखें।
* बीमार पड़ने पर जड़ी-बूटी का ही सेवन करें, क्योंकि वे हानिरहित होती हैं।
* तेल-मिर्च-मसाले का परहेज करें तथा अंकुरित भोजन का सेवन करें। यह शरीर को स्वस्थ रखने में सहायक होता है।
* मानसिक स्वस्थता के लिए नियमित स्वाध्याय तथा श्रेष्ठ चिंतन का अभ्यास डालें।
* "जल्दी सोएँ-जल्दी जागें।" यही स्वस्थ जीवन का आधार है।
* "व्यस्त रहें-मस्त रहें" के सिद्धांत को जीवन में व्यावहारिक रूप से उतारें।
* सप्ताह में एक दिन का उपवास करें। जब कार्य से छुट्टी, तब पेट को क्यों नहीं? ध्यान रहे कि कोई ऐसी बीमारी न हो, जिसमें उपवास निषिद्ध हो।
* कभी भी झुककर न बैठें, कमर सीधी रखें। रक्त की शुद्धि, फेफड़ों की शुद्धि के लिए गहरी सांस अनिवार्य है।
* कपड़े ढीले पहनें तथा आवश्यकतानुसार ए.सी. इत्यादि का कम प्रयोग करें, शरीर के रोम खुले रहें, पसीना न रुके।

इन सभी नियमों का स्वयं तो पालन करें ही साथ में अपने-अपने क्षेत्र में इन सभी को व्यावहारिक रूप में पालन कराने के लिए प्रयत्नशील रहें, तभी हम परम पूज्य गुरुदेव के सपनों का युग निर्माण कर सकेंगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शिक्षा आंदोलन

अशिक्षा का कलंक मिटाएँ। कामकाजी विद्यालय चलाएँ॥

स्वतंत्र भारत की आधी शताब्दी निकल जाने के बाद आज भी अशिक्षा अपनी जड़ें जमाए बैठी है, जो प्रगति की पाँव की बेड़ी बनी हुई है। शिक्षा के अभाव में अशिक्षित का जीवन बोझिल बना हुआ है। वस्तुतः अशिक्षा जीवन का अभिशाप है।

अशिक्षा के इस कलंक को कैसे मिटाया जाए? हम ऐसे व्यक्तियों पर विचार करें, जो अपने भरण-पोषण और रोजी-रोटी के लिए किसी छोटे-बड़े काम में लगे हैं, पर अशिक्षित हैं। इन कामकाजी लोगों की शिक्षा कैसे हो? इन्हें क्या पढ़ाया जाए? कब पढ़ाया जाए? कितना पढ़ाया जाए? कि ये अपनी रोजी-रोटी के साथ-साथ पढ़ भी लें और अपने काम में कोई कठिनाई भी अनुभव न करें। जहाँ तक इनकी पढ़ाई का प्रश्न है, यह पढ़ाई ऐसी हो कि ये अपने छोटे-छोटे कामों के लिए किसी दूसरे पर निर्भर न रहें, बल्कि आत्मविश्वास के साथ सफलतापूर्वक सम्मानजनक जीवन जी सकें।

कामकाजी विद्यालय

गायत्री परिजन, कामकाज से जुड़े अशिक्षित व्यक्तियों के लिए कामकाजी विद्यालय चलाएँ। इन विद्यालयों में पढ़ने-लिखने और गणित की सामान्य योग्यता के साथ-साथ ऐसा व्यावहारिक ज्ञान दिया जाए, जो उनके दैनिक जीवन में सहयोगी हो और उनमें

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन मूल्यों के प्रति अभिरुचि जाग्रत कर शोषण विहीन समाज की संरचना कर सके।

विद्यालय का स्वरूप

स्थान—ये विद्यालय शक्तिपीठों, प्रज्ञापीठों, किसी हॉल, किसी उपयुक्त सार्वजनिक स्थान, फैक्टरियों और कारखानों में भी उनके संचालक-प्रबंधक के परामर्श से कर्मचारियों की शिक्षा के लिए चलाए जा सकते हैं।

प्रवेश—होटलों, कारखानों, फैक्टरियों आदि में काम करने वाले अशिक्षित किशोरों और वयस्कों का प्रवेश।

शिक्षण—इन विद्यालयों में गायत्री परिवार के सेवानिवृत्त या सेवारत अथवा समाजसेवी संस्थाओं के वे नैष्ठिक परिजन जो गायत्री परिवार से भी जुड़े हैं, शिक्षण का कार्य कर सकेंगे।

समय—शिक्षार्थियों और गायत्री परिवार के स्थानीय परिजनों द्वारा शिक्षण का समय सुनिश्चित किया जा सकेगा। ये विद्यालय दो से तीन घंटे तक सप्ताह में दो या तीन दिन, तब तक चलाए जा सकेंगे, जब तक शिक्षार्थियों को अपेक्षित ज्ञान नहीं हो जाता।

पाठ्यक्रम—(अ) पढ़ना (ब) लिखना (स) प्रारंभिक गणित (द) व्यावहारिक ज्ञान।

(अ) पढ़ना—

१. हिंदी अथवा क्षेत्रीय भाषा की वर्णमाला के वर्णों को पहचानना।

२. ह्रस्व-दीर्घ मात्राओं को समझना।

३. शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ना।

४. छोटे-छोटे वाक्यों से प्रारंभ करके कहानी, निबंध, नाटक, गीत, कविता आदि जीवनोपयोगी साहित्य को समझते हुए प्रवाहपूर्वक पढ़ना।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

५. पत्र, पोस्टर, विज्ञापन, अखबार आदि पढ़ना, समझना और ठीक-ठीक अर्थ ग्रहण करना।

६. बोलकर अपनी बात को प्रभावपूर्ण ढंग से कहने की योग्यता विकसित करना।

(ब) लिखना—

१. सुडौल, सुंदर और शुद्ध लेखन का अभ्यास।

२. व्यक्तिगत पत्र, निमंत्रण पत्र, आवेदन पत्र आदि के लेखन का अभ्यास।

(स) गणित—

१. अंकों का जोड़, बाकी, गुणा, भाग समझना।

२. लेन-देन का ठीक हिसाब लगा लेना।

३. अपना हिसाब-किताब स्वयं लिख लेना।

(द) व्यावहारिक ज्ञान—

१. ग्राम पंचायत, ब्लॉक, तहसील, जिला पंचायत, नगर पालिका, विधान सभा, लोक सभा की प्रक्रियाओं की सामान्य जानकारी और मताधिकार की उपयोगिता से अवगत कराना।

२. पोस्ट ऑफिस, पोस्ट कार्ड, अंतर्देशीय, लिफाफा, डाक टिकट, रसीदी टिकट, पोस्टल आर्डर, अंडर पोस्टल सर्टिफिकेट, स्पीड पोस्ट, रजिस्टर्ड पत्र, पोस्ट पार्सल (रजिस्टर्ड/अनरजिस्टर्ड) मनीआर्डर, तार मनीआर्डर, तार आदि के विषय में जानकारी देना तथा फार्म आदि भरवाने का अभ्यास कराना।

३. टेलीफोन डाइरेक्टरी देखना, टेलीफोन करना, ट्रंक बुक करना, फोनोग्राम और फैक्स करना, टेलीफोन बिल जमा करना।

४. बैंकों के विभिन्न प्रकार के खातों की जानकारी देना, आवश्यकतानुसार बैंक में खाता खोलना (फार्म भरना) बैंक से रुपया निकालने और जमा करने के अलग-अलग फार्म भरना, चैक बुक का उपयोग करना, चैक भरना, पासबुक में अपना एकाउंट चैक करना, बैंक ड्राफ्ट, ट्रेवलर्स चैक बनवाना, बैंक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चालान बनवाना, आवश्यकता पड़ने पर बैंक लोन की कार्यवाही करना (फार्म आदि भरना), बैंक की जन-कल्याणकारी योजनाओं का लाभ लेना।

५. फ्यूज बाँधना, विद्युत, पानी आदि के बिल जमा करना।

६. रेलवे टाइमटेबिल देखना, रिजर्वेशन का फार्म भरना, रेलवे पार्सल भेजना, रेलवे कंसेशन की जानकारी रखना।

७. साईकिल का पंचर जोड़ना, नट-बोल्ट कसना, ब्रेक सुधारना, ग्रीसिंग-आइलिंग करना आदि।

८. लकड़ी के खिड़की-दरवाजों व फरनीचर के लिए स्प्रिट पालिश बनाना, स्वयं पालिश करना, पेण्ट करना, बेंत की कुर्सी बुनना, सिलाई, बुनाई, कढ़ाई आदि करना।

९. पंखा, सिलाई मशीन, आइरन, गैसस्टोव आदि सुधारना।

१०. हर पहलू पर जीवन मूल्यों में रुचि जाग्रत करना।

यदि इस प्रकार का व्यावहारिक ज्ञान दिया जाए, तो अशिक्षा का कलंक तो मिटेगा ही साथ ही व्यक्ति में आत्मविश्वास जागेगा और उसकी रुचि स्वावलंबन की ओर बढ़ेगी।

व्यावहारिक ज्ञान के लिए प्रपत्र एवं कार्य संबंधित विभागों से मँगाकर स्वयं भरने का अभ्यास कराया जाए।

शुल्क—केवल आवश्यकतानुसार शुल्क ले सकते हैं। कोई मासिक शुल्क न लें। इस शुल्क में से ही प्रपत्रों की फोटोस्टेट आदि का खरच कर लिया जाए।

मूल्यांकन—स्व मूल्यांकन योजना लागू हो।

रजिस्ट्रेशन—इन कामकाजी विद्यालयों का रजिस्ट्रेशन शांतिकुंज हरिद्वार में शिक्षा संकाय के अंतर्गत किया जाएगा।

विद्यालयों में विचारक्रांति अभियान

विद्यालयों में शिक्षा के साथ-साथ विद्या का भी समावेश करना होगा अर्थात छात्र-छात्राओं में ज्ञान के साथ श्रेष्ठताओं और शाश्वत मूल्यों को विकसित करना होगा, ताकि वे स्वयं के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनोविकारों से लड़ाई लड़ सकें। अनीति, अन्याय और अत्याचारों से लोहा ले सकें तथा जीवन के हर क्षेत्र से नीचता, निकृष्टता और अवांछनीयताओं को जड़ उखाड़कर फेंक सकें।

इस जाग्रति के लिए विद्यालयों में वैचारिक क्रांति का बिगुल बजाना होगा। शिक्षकों ने यदि यह मोर्चा सँभाला, तो इक्कीसवीं सदी का भारत कुछ और ही होगा। तब हम देखेंगे, खोए हुए गौरव को प्राप्त करता हुआ नया भारत।

छात्र-छात्राओं में नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विकास के लिए शांतिकुंज उन्हें भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के माध्यम से नया चिंतन दे रहा है। इसी क्रम में विद्यालयों में "संस्कृति मंडल" गठित किए जा रहे हैं। विस्तृत जानकारी के लिए शांतिकुंज से "विद्यालयों में संस्कृति मंडल का गठन" तथा "छात्रों में सांस्कृतिक विकास की कार्य योजना" नामक पुस्तक मँगाई जा सकती है।

बाल संस्कारशालाएँ—विद्यालयों में केवल विभिन्न विषय भर पढ़ाए जाते हैं। छात्र-छात्राओं को जीवन विद्या के सूत्र बतलाने की व्यवस्था कहीं नहीं है। इस कमी की पूर्ति के लिए पू० गुरुदेव पं० श्रीराम शर्मा आचार्यजी ने बाल संस्कारशालाओं की योजना दी है। छात्र पढ़ें, किसी भी स्कूल में, उनके आयु वर्ग या शिक्षा स्तर के अनुसार उनके लिए निःशुल्क या नाममात्र का शुल्क लेकर ट्यूटोरियल कक्षाएँ चलाई जाएँ। उनमें उन्हें होमवर्क पूरा कराने, कमजोर विषयों में मार्गदर्शन देने के साथ ही सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति जागरूक और अभ्यस्त बनाया जाए। देश के नवनिर्माण के लिए प्राथमिक स्कूल से कॉलेज स्तर तक विचारक्रांति के सघन प्रयास अपेक्षित हैं। शिक्षकों से अपेक्षा है कि वे विद्यालयों में विचारक्रांति का शंखनाद करें और नए समाज की नई संरचना में बढ़-चढ़कर हाथ बटाएँ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वावलंबन आंदोलन

किसी भी देश की खुशहाली स्वावलंबी नागरिकों पर टिकी होती है। हमारा राष्ट्र गाँव प्रधान, कृषि प्रधान है। यहाँ आर्थिक क्रांति आएगी, तो गाँवों को केंद्रित कर बनाई गई योजनाओं द्वारा ही आएगी। ग्रामोद्योग हमारी अर्थशक्ति का आधार बनेंगे, तो ग्रामीण संस्कृति भी फलती-फूलती रहेगी, विकसित होती रहेगी। शहरीकरण जो आज का सबसे बड़ी विभीषिका लाने वाला कारण बन गया है, उसे भी "गाँव की ओर वापस लौटो" अभियान को सार्थक बनाकर, कम किया जा सकेगा। अतः आवश्यकता ऐसा आर्थिक तंत्र खड़ा करने की है, ताकि गाँव स्वावलंबी व आकर्षक बन सके। वहाँ का हर निवासी अपने भविष्य के लिए आशान्वित व आश्वस्त हो सके। जो, जहाँ, जिस स्थिति में रह रहा है, वहीं उसके लिए स्वावलंबन की व्यवस्था बने। यह चुनौती है आज प्रतिभाओं के लिए।

१. गायत्री परिवार की कार्य योजना—

युगऋषि पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के निम्न सूत्रों को आधार मानकर ग्रामीण अर्थतंत्र का आधार खड़ा करना है।

१. श्रम की प्रचुरता एवं नियोजन हेतु पूँजी की न्यूनता की स्थिति में कुटीर उद्योग ही एकमात्र समाधान दे सकते हैं। इन्हीं से बेरोजगारी मिटाने व असंख्य ग्रामीणों की औसत आय बढ़ाने का शाश्वत आधार बन सकता है।

२. कुटीर उद्योग को हर घर में स्थान मिले, हर खाली हाथ को काम मिले। अतः कुटीर उद्योगों को पुनः प्रतिष्ठित करना है, उन्हें घर-घर में स्थापित करना है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

१.१ कैसे उद्योग?

१. जो श्रम पर आधारित हों, ताकि श्रम खप सके। श्रम को सरल व अधिक उत्पादक बनाने वाली मशीनों के उपयोग में हर्ज नहीं है।

२. वे अपनी रोजमर्रा की आवश्यकताओं के लिए आत्मनिर्भर बनें। इससे उत्पाद की खपत का भी समाधान होगा।

३. प्रदूषण फैलाने वाले न हों, प्रकृति संतुलन में सहायक हों।

४. उद्योग इतना सहज, सरल एवं स्वाभाविक हो कि ग्रामीणों की सीमाएँ (अशिक्षा, अनुभव व ट्रेनिंग की कमी, पूँजी की कमी) उसमें बाधक न हो। इसके लिए यह चीनी सूक्ति कारगर होगी— "जो वे जानते हैं, उससे प्रारंभ करो, जो उनके पास है, उस पर निर्माण करो।"

५. कृषि के पूरक व सहायक हों।

६. स्थानीय संसाधनों (कृषि व कृषि उत्पाद, पशुधन, प्राकृतिक संपदा) के उपयोग पर आधारित हों।

१.२ उद्योग संचालन व पूँजी की व्यवस्था का आधार सामूहिकता—

गरीबी व पिछड़ेपन की स्थिति में एकाकी पूँजी व एकाकी प्रयास कारगर नहीं होंगे। अतः सामूहिकता को उद्योग संचालन का आधार बनाना है। ८-१० लोगों को स्वयं सहायता बचत समूह के रूप में संगठित कर सामूहिक रूप में उद्योगों की स्थापना करनी चाहिए। इससे पूँजी की व्यवस्था, उद्योग का संचालन व विपणन की व्यवस्था सरल हो जाती है। अतः छोटे व मँझले किसानों, जिनके लिए अकेले साधन विकसित करना कठिन है, के लिए पंच कृषक, स्वयं सहायता बचत समूह तथा भूमिहीन श्रमिकों के लिए व्यवसाय आधारित समूह बनाए जा सकते हैं। गायत्री परिवार के ३०० से अधिक समूह क्षेत्रों में चल रहे हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

१.३ कुटीर उत्पाद की खपत व्यवस्था—

कुटीर उद्योगों को पुनः स्थापित करने में कुटीर उत्पादों की खपत का प्रश्न सबसे महत्त्वपूर्ण है। उसके लिए कच्चा माल जुटाना और उत्पाद की दक्षता प्राप्त करना, उतना कठिन नहीं है, जितना खपत की व्यवस्था करना। इसके लिए निम्न बातों पर ध्यान देना है—

१. उत्पाद की गुणवत्ता (प्रामाणिकता) सुनिश्चित करनी होगी।

२. कुटीर उत्पाद के उपयोग को राष्ट्रभक्ति, राष्ट्रभावना, राष्ट्रगौरव से जोड़ना होगा। गाँधीजी ने खादी धारण को राष्ट्रभक्ति का एक प्रमुख चिह्न बनाने की मानसिकता विकसित की थी। उसी प्रकार का जन-आंदोलन खड़ा करना होगा। अपने माध्यम से बनाए जा रहे कुटीर उत्पाद को उपयोग करने का स्वयं संकल्प लें, दूसरों को प्रेरित करें तथा संकल्प दिलाएँ।

३. आत्मनिर्भर बनाने तथा मार्केट नेटवर्क तैयार करने की दृष्टि से आसपास के ८-१० गाँवों को एक मार्केट यूनिट के रूप में विकसित किया जाए। विभिन्न गाँवों में भिन्न प्रकार के आइटम बनें और उनकी अधिकांश खपत उन गाँवों में हो जाए।

४. सहकारी स्टोरों की स्थापना—कुटीर उत्पाद की बिक्री हेतु अलग से ही एक या अधिक स्वयं सहायता समूह गठित किए जा सकते हैं, जो केंद्रीय बिक्री स्टोर की स्थापना कर सकते हैं। इनमें व फेरी दोनों ही ढंग से बिक्री का कार्य संपन्न किया जा सकता है।

१.४ गौ-पालन को ग्रामीण स्वावलंबन की धुरी बनाया जाए—

गौ आधारित कृषि, स्वास्थ्य, ऊर्जा एवं उद्योग ही गाँव को स्वावलंबी बनाएँगे। इससे कृषि के लिए पौष्टिक, प्रदूषणरहित, सस्ता खाद, गौमूत्र के रूप में कीटनाशक, स्वास्थ्य के लिए पौष्टिक दुग्ध, गोबर-गौमूत्र से बनी दवाइयाँ, कृषि परिवहन एवं घरेलू ईंधन के लिए प्रदूषणरहित ऊर्जा उपलब्ध हो

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सकेगी तथा कितने ही प्रकार के कुटीर उत्पाद बनाए जा सकते हैं, जिनके प्रशिक्षण की व्यवस्था शांतिकुंज में की जा रही है।

१.५ टूटी वस्तुओं की मरम्मत करने के प्रचलन को राष्ट्रीय हित में गरीबी उन्मूलन की एक महत्त्वपूर्ण नीति माना जाए—

टूटी वस्तुओं के मरम्मत की दुकानें खुल सकें, तो हर गाँव में कई गरीब परिवारों का गुजारा हो सकता है और लोग पुराने सामान से ही दूने समय तक कार्य चलाते रहकर आर्थिक बचत करते रह सकते हैं। टूटे सामान की मरम्मत के कौशल को हर घर में स्थान मिलना चाहिए। गैस स्टोव, वाहन, बिजली के उपकरण, कम्प्यूटर, फर्नीचर, पुराने कपड़ों की सिलाई व उनसे छोटे कपड़े बनाना आदि कितने ही कार्य आसानी से किए जा सकते हैं।

२. बेरोजगारी निवारण व स्वावलंबन की दिशा में किसका क्या सहयोग हो सकता है ?

२.१ व्यावसायिक पारमार्थिक प्रकल्पों की स्थापना—

भावनाशील संपन्न ऐसे प्रकल्प खड़े कर सकते हैं, जिसमें भाव सेवा का तथा दक्षता व्यावसायिक हो। उनका पैसा डूबेगा नहीं, गरीब लोगों को अपने श्रम का जायज मूल्य मिल जाएगा। स्थानीय वन संपदा पर आधारित कितने ही ऐसे प्रोजेक्ट खड़े हो सकते हैं।

२.२ कुटीर उत्पादों की विपणन व्यवस्था—

युग चेतना से प्रभावित पहले से बड़े व्यवसायों में लगे संगठन/व्यक्ति/कंपनी ग्रामोद्योग उत्पाद के मार्केटिंग में सहयोग कर सकते हैं। हर जिला स्तर पर ऐसे एक या दो बिक्री केंद्रों की व्यवस्था हो। वे साप्ताहिक हाटों से भी ग्रामोद्योग उत्पाद को एकत्र करने का काम कर सकते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कुटीर उत्पादों की बिक्री व्यवस्था, खादी ग्रामोद्योग, सहकारी बाजारों से करने के लिए प्रक्रिया का सरलीकरण करने की आवश्यकता है। इसमें राजकीय तंत्र सहयोग कर सकता है।

२.३ शोध व प्रशिक्षण व्यवस्था—

१. ऐसी छोटी मशीनों के लिए, जो श्रम को अधिक उत्पादक व सरल बना सकें तथा उत्पाद को भी कम खरचीला बना सकें, शोध की आवश्यकता है। इस कार्य में राजतंत्र सहयोग कर सकता है।

२. कुटीर उत्पादों के प्रशिक्षण की क्षेत्रों में व्यापक स्तर पर व्यवस्था बने। इसमें सरकारी तंत्र तथा कुछ सीमा तक स्वयं सेवी संस्थाएँ सहायता कर सकती हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पर्यावरण आंदोलन

प्रगति का यह आवरण जिसमें हम रहते हैं तथा निरंतर गतिशील बने रहते हैं, उसे पर्यावरण कहते हैं। इसके विभिन्न अंगों—मृदा, जल, वायु, प्रकाश, ताप, वनस्पति एवं जीव-जंतुओं के आंतरिक संबंधों का संतुलन **पर्यावरण संतुलन** कहलाता है। प्रकृति के इस संतुलन का अपनी स्थिति में बने रहना, वनस्पतियों, जीवों, प्राणियों तथा मानव के अस्तित्व के लिए आवश्यक है, परंतु मनुष्य ने अपनी भोगवादी जीवन शैली व साधन बढ़ाने के प्रयासों में विकास के नाम पर प्रकृति का अनियंत्रित दोहन कर उसकी शृंखला की अनेक कड़ियों को तोड़ डाला है। ईश्वर ने मनुष्य को जो भूमि, जल, वायु, आकाश, नदियाँ, पहाड़, विशाल हरे-भरे वन, वन्य जीवन निःशुल्क व पूर्णतः निर्दोष दिए थे, उनका स्वरूप बिगाड़कर रख दिया है। विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों के कारण सांस लेने के लिए शुद्ध हवा, पीने के लिए शुद्ध जल एवं खाने के लिए शुद्ध खाद्य मिलना दूभर हो गया है। अनियंत्रित उद्योगों एवं वाहनों से निकलते धुएँ एवं घटते जंगलों के कारण जहाँ एक ओर वातावरण का ताप बढ़ रहा है, ओजोन परत नष्ट हो रही है, वहीं प्रकृति में भारी असंतुलन पैदा हो गया है। समझदार मनुष्य की नासमझी ने अपने अस्तित्व को ही दाँव पर लगा दिया है। प्रकृति मनुष्य की सहचर, उसकी पोषक, उसको धारण करने वाली, उसकी माँ, उसकी जीवनदायिनी है। इसीलिए महान विज्ञानवेत्ता ऑइंस्टीन ने चेतावनी देते हुए कहा था कि वैज्ञानिक विकास तो ठीक है, पर उसे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकृति विरोधी नहीं होना चाहिए। उस समय चेतावनी को किसी ने गंभीरता से नहीं लिया, परंतु प्रकृति के अनियंत्रित दोहन के फलस्वरूप हम उस मुकाम पर पहुँच गए हैं, जहाँ प्रकृति इतनी विक्षुब्ध है कि हमारी क्रिया की प्रतिक्रिया स्वरूप दंड देने पर उतारू है। अनियंत्रित व अनियमित वर्षा, प्रतिवर्ष आने वाली बाढ़ें एवं सूखा-संकट, आएदिन भूकंपों की विनाश लीला, समुद्र में आने वाले विनाशकारी तूफान इसी की परिणति है।

अतः यदि मनुष्य को अब आगे अपना अस्तित्व बचाना है, तो प्रकृति से दोस्ती करनी होगी। उसका दोहन नहीं, पोषण करना होगा। उन तरीकों को खोजना व व्यवहार में लाना होगा, जिनसे प्रकृति को संतुलित किया जा सके।

पर्यावरण संरक्षण के लिए क्या करें ?

१. यथासंभव प्रदूषण किया ही न जाए—

१.१ "उपयोग करो और फेंको" की संस्कृति प्रदूषण का बहुत बड़ा कारण है। अतः ऐसे आइटम का कम-से-कम उपयोग किया जाए, जो प्रदूषण को बढ़ाते हैं और कहीं भी न फेंककर उसे व्यवस्थित किया जाए। उदाहरणार्थ बाजार से सामान लाने की प्लास्टिक की थैलियाँ, खाने-पीने के काम आने वाले प्लास्टिक के प्याले, प्लेट, बोतल अनेक चिकित्सा उपकरण इत्यादि को गलाकर पुनः वस्तुएँ बनाई जाएँ।

१.२ प्रदूषणकारी उद्योग यथासंभव लगाए ही न जाए। उनकी जगह श्रम आधारित कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहित किया जाए।

१.३ डीजल, पेट्रोल चालित व्यक्तिगत वाहनों का उपयोग घटाया जाए, सार्वजनिक वाहनों का उपयोग किया जाए।

१.४ बसों की जगह ट्रेन यात्राओं को वरीयता दी जाए।

१.५ किसी भी कचरे (आर्गेनिक वेस्ट) को जलाया न जाए, खुला न फेंका जाए, बल्कि रिसाइकल कर आर्गेनिक खाद बनाया जाए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

१.६ ध्वनि विस्तारक यंत्रों का प्रयोग यथासंभव घटाया जाए। इसके भयंकर दुष्परिणामों से जन-सामान्य को अवगत कराया जाए।

२. प्रदूषण रहित वैकल्पिक ऊर्जा का उपयोग बढ़ाया जाए—

२.१ पैट्रोलियम ऊर्जा के स्थान पर पशु ऊर्जा का उपयोग बढ़ाया जाए। पशुऊर्जा का उपयोग मेकेनिकल ऊर्जा एवं बायोगैस ऊर्जा के रूप में किया जा सकता है, जिससे कृषि ऊर्जा, घरेलू ईंधन व परिवहन ऊर्जा की आवश्यकताएँ पूरी की जा सकती हैं। बैल से ग्रामीण स्तर पर विद्युत ऊर्जा भी बनाई जा सकती है।

२.२ साइकिल के उपयोग को बढ़ाया जाए, इसके उपयोग में गौरव अनुभव किया जाए। चीन में साइकिलों की संख्या भारत से ८ गुना अधिक है। इसके उपयोग से प्रदूषण एवं राष्ट्रीय ऊर्जा संकट का बड़े पैमाने पर समाधान होगा। पैट्रोलियम पदार्थों में खरच होने वाली विदेशी मुद्रा बचेगी, उपयोग करने वालों का स्वास्थ्य सुधरेगा। युगऋषि पं० श्रीराम शर्मा आचार्य ने साइकिल को २१वीं सदी का वाहन घोषित किया है।

२.३ भोजन पकाने, पानी गरम करने में सौर ऊर्जा का उपयोग बढ़ाया जाए। जहाँ संस्थाएँ खरच वहन कर सकती हैं, वहाँ सौर विद्युत का उपयोग राष्ट्रीय कर्त्तव्य मानकर किया जाए।

२.४ ऊर्जा संरक्षण—

(अ) भोजन पकाने में चौड़े तले के बरतनों का उपयोग किया जाए।

(ब) खुले बरतनों के स्थान पर भाप कुकर का प्रयोग किया जाए।

(स) सामूहिक भोजन पकाने का प्रचलन बढ़ाया जाए। गाँवों, मुहल्लों में तंदूर भट्ठी का प्रचलन इस दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम हो सकता है।

(द) आधुनिक निर्धूम चूल्हों का प्रयोग बढ़ाया जाए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

३. हरीतिमा संवर्द्धन में अपनी भूमिका सुनिश्चित करें—

३.१ पेड़ हत्या जीव हत्या है, यह धारणा जन-जन के मन में पुनः जाग्रत की जाए।

३.२ प्रत्येक गाँव का अपना वन हो। गाँव अपनी ईंधन एवं अन्य लकड़ी की आवश्यकताओं के लिए आत्मनिर्भर बनें, इसे प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाया जाए।

३.३ जन्मदिन, विवाहदिन, पुण्यतिथि, रक्षा बंधन एवं अन्य धार्मिक व राष्ट्रीय पर्वों पर वृक्षारोपण के संकल्प लिए जाएँ। यह संकल्प वृक्ष के रोपण, सिंचन एवं सुरक्षा को लंबे समय तक सुरक्षित रखने के लिए हो।

३.४ सार्वजनिक भूमियों एवं सार्वजनिक स्थलों (मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, गिरजाघर, स्कूल, अस्पताल आदि) में हरीतिमा संवर्द्धन के कार्यक्रम सामूहिक श्रमदान से निरंतर चलाए जाएँ।

४. कचरे की सुव्यवस्था की जाए—

४.१ घरेलू कचरे को एक ही पात्र में डालने के बजाए, डिग्रेडेबिल तथा नोनडिग्रेडे बिल (प्लास्टिक, लोहा, काँच आदि) को अलग-अलग रखने की व्यवस्था की जाए। डिग्रेडेबिल वेस्ट से कंपोस्ट या केंचुआ खाद बनाई जाए।

४.२ गाँव के सामूहिक कचरे को जलाने या घूरे के रूप में खुले में फेंकने के बजाए कंपोस्ट खाद बनाने में उपयोग किया जाए।

४.३ नगरों में गा बेज डिस्पोजल (घरेलू वेस्ट, बाजारू यार्ड वेस्ट, सब्जी मंडी वेस्ट, रेस्टोरेंट वेस्ट आदि) एक समस्या बन गई है। शहरी कचरे से कंपोस्ट खाद, केंचुआ खाद, ईंधन गैस एवं विद्युत बनाकर इस समस्या को लाभकारी उद्योग के रूप में बदला जा सकता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

४.४ प्लास्टिक का उपयोग करना सीवेज एवं जानवरों के लिए भारी समस्या बन गया है। इन थैलियों के बनाने व उपयोग न करने के नियमों को कड़ाई से लागू किया जाए।

५. सूक्ष्म प्रकृति का परिशोधन—

इसके लिए शब्दशक्ति, यज्ञ विज्ञान के प्रयोग-उपचार-समूह मन के जागरण की साधना, युगानुकूल है। जन स्तर पर इसका अधिकाधिक प्रयोग बढ़ता जा रहा है। गायत्री परिवार ने इन प्रयासों के अंतर्गत २३ अश्वमेध यज्ञ भारत में एवं ५ विदेश में आयोजित किए और पूर्णाहुति के रूप में यह आयोजन ७ से ११ नवंबर २००० की अवधि में संपन्न हुआ। अनेक आयोजनों में प्रदूषण विशेषज्ञों ने वैज्ञानिक उपकरणों की सहायता से परीक्षण किए, जिनके उत्साहवर्द्धक परिणाम सामने आए। आशा की जाती है कि सद्भावना एवं सद्विचारों की वृद्धि के रूप में इन महायज्ञों के प्रभाव अब सभी को दृष्टिगोचर होंगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नारी जागरण आंदोलन

१. नारी शक्ति का पराभव—

सुसंस्कृत परिवार ही नररत्नों, श्रेष्ठ नागरिकों की खदान है। सुसंस्कृत परिवार में स्वर्ग के और विसंगत परिवार में नरक के दर्शन होते हैं। एक सुसंस्कृत परिवार की धुरी है—प्रगतिशील व सुसंस्कृत नारी। यह हजार बार ध्यान रखने योग्य बात है कि पुरुष अर्थ उपार्जन की, सुविधा-साधन पाने की व्यवस्था कर सकता है, पर घर में स्वर्गीय वातावरण पैदा करने की उसकी स्थिति नहीं है। उसके पास न समय, न अनुभव, न भावना, न कला और न उदारता है। इन आधारों के बिना परिवार संस्था का भावनात्मक नवनिर्माण संभव नहीं हो सकता। सुसंस्कृत परंपराएँ ही व्यक्ति, परिवार और समाज को समुन्नत बनाती हैं। नारी ही है, जो इस छोटे किंतु महत्त्वपूर्ण कार्य को ठीक तरह कर सकने की मौलिक योग्यता भगवान के घर से अपने साथ लेकर आई है।

भावी पीढ़ी का नए युग का स्तर ऊँचा उठाना हो, तो यह नोट करना चाहिए कि नारी को प्रगतिशील बनाए बिना, अन्य कितने ही साधन जुटा लेने पर भी अभीष्ट प्रयोजन की सिद्धि न हो सकेगी। सुविकसित व सुसंस्कृत नारी के सहयोग व नेतृत्व से ही सुखद संभावनाओं से भरे-पूरे भविष्य का स्वप्न साकार किया जा सकता है। अतः नारी स्वच्छंदता के बजाए नारी शक्ति जागरण की ओर ध्यान दिया जाए—यही गायत्री परिवार की अवधारणा है। उपेक्षा और पिछड़ेपन ने नारी की क्षमता और उमंग को कुंठित करके रख दिया है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हमारे देश में तो एक पुरुष के लिए एक नारी की श्रमशक्ति खप जाती है। सारे दिन रोटी-बच्चों में ही लगी रहती है। न तो वह अपनी योग्यता बढ़ा सकती है और न उसके श्रम का ही उपयोग हो पाता है। परिवार और समाज की आर्थिक प्रगति के लिए नारी का सुयोग्य और समुन्नत होना आवश्यक है। अतः बराबर के सहयोगी के रूप में उसका विकसित होना आवश्यक है।

नारी उत्थान कैसे ?

नारी से परिवार संस्था के विकास में, सामाजिक प्रगति में तथा व्यक्तिगत सहयोग में कुछ कहने लायक योगदान प्राप्त करना हो तो उसकी निम्न मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति होनी चाहिए—

स्वास्थ्य—

* शिशुपालन, प्रजनन, अनियमितता, पुरुषों की प्रतीक्षा में खाने-सोने की अव्यवस्था जैसे कारणों से उनका स्वास्थ्य लड़खड़ाने लगता है। उसे सँभालने, सुधारने के लिए क्या किया जाना चाहिए ? यह महिला स्वास्थ्य संरक्षण की अतिरिक्त समस्या है। अतः हर व्यक्ति को यह विचार करना चाहिए कि निम्न दबावों से राहत देकर नारी के स्वास्थ्य की बरबादी कैसे रोकी जा सकती है ?

* परिवार की दिनचर्या ऐसी होनी चाहिए, जिसमें काम के घंटे नियत हो और सोने-जागने के लिए उचित समय-संतुलन बना रहे। देर में सोने और सबेरे जल्दी उठने के फलस्वरूप महिला का स्वास्थ्य खराब होता है।

* प्रजनन का अनावश्यक भार नारी पर न लादा जाए। रोते-कराहते, जीने और बेमौत मरने के लिए प्रजनन का दबाव कितना घातक होता है, इसे अनुभव किया जा सके, तो नारी के स्वास्थ्य की बरबादी रुक सकती है।

* घूँघट, परदे में कैद रहने, खुली धूप, हवा का अवसर न मिलने, विनोद-मनोरंजन की गुंजाइश न रहने से नारी का शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य नष्ट होता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शिक्षा—

नारी को शिक्षित करने के लिए निम्न बिंदुओं पर ध्यान दें—

* नौकरी के लिए पढ़ाई की आवश्यकता है, यह सोचकर नारी शिक्षा की उपेक्षा करना, उसे मानसिक दृष्टि से अपंग बना देने जैसा अन्याय है। अशिक्षितों को घर में शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा मिलनी चाहिए। जो थोड़ी पढ़ी हैं, अधिक और पढ़ना चाहती हैं, उन्हें उसके लिए अवसर मिले। पुस्तकालयों की सुविधा उनके लिए हो।

* मात्र स्कूली पढ़ाई शिक्षा की सीमा नहीं है। वह तो प्रारंभिक प्रवेशद्वार है। नारी को अपने व्यक्तित्व के विकास एवं कर्त्तव्य निर्वाह संबंध में अति महत्त्वपूर्ण जानकारियों का समुचित ज्ञान होना चाहिए। सामाजिक कुरीतियाँ, मूढ़ मान्यताएँ, अवांछनीयताएँ किस प्रकार मनुष्य की आधी शक्ति नष्ट करती है? यह समझ में आ सके, तो मस्तिष्क पर छाई रहने वाली विडंबनाएँ रचनात्मक दिशा में लग सकती है। शिशुपालन, दांपत्य जीवन में परिवार में भावनात्मक स्नेह-सौजन्य का अभिवर्द्धन, उतार-चढ़ावों के बीच संतुलन की स्थिति रखने जैसी अनेक महत्त्वपूर्ण शिक्षाएँ हैं, जिन्हें उपलब्ध कराने के उपाय खोजे और सोचे जाने चाहिए।

* जिनकी उम्र बड़ी हो चुकी है, जो विवाहित हैं, जिन्हें घर-गृहस्थी सँभालनी है, उनको भी अशिक्षित न रहने दिया जाए। उनके लिए प्रौढ़ नारी शिक्षा का प्रबंध व्यापक रूप से होना चाहिए। गायत्री परिवार को तो इस प्रयास में पूरी तत्परता के साथ जुटना चाहिए। तीसरे प्रहर गली-गली, मुहल्ले-मुहल्ले, गाँव-गाँव महिला पाठशालाएँ चलनी चाहिए।

स्वावलंबन—

नारी के पिछड़ेपन एवं शोषण का कारण मात्र सामाजिक प्रतिबंध ही नहीं, अर्थोपार्जन की क्षमता का अभाव भी है। इसी विवशता के कारण उसे दबाया जाता है और दबना पड़ता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नैतिक दबाव भी पर्याप्त है। अपवादों की बात छोड़कर सामान्यत: नारी का कार्यक्षेत्र परिवार ही है। अत: आर्थिक स्वावलंबन की बात घर के दायरे में ही सोची जाए और उसकी गतिविधियों को एक आंदोलन के रूप में संगठित किया जाए। आर्थिक स्वावलंबन के लिए कुटीर उद्योग सिखाने की व्यवस्था हो। शिक्षा विस्तार के साथ-साथ गृह-उद्योगों की कक्षा भी चलनी चाहिए।

अपने को स्वावलंबी महसूस करने पर नारी में वह आत्मविश्वास सहज ही पैदा होने लगेगा, जिसके आधार पर वह समाज निर्माण की महत्त्वपूर्ण भूमिकाओं में खुलकर हाथ बँटा सकेगी।

नारी उत्थान के लिए नारी वर्ग आगे आए, पुरुष उनका सहयोग करे —

नारी समाज के उत्कर्ष में नारी को ही आगे आना पड़ेगा। विधवाएँ, परित्यक्ताएँ तथा ऐसी कन्याएँ जो विवाह के झंझट में पड़कर अपनी जिंदगी कोल्हू के बैल की जैसी बनाने से स्पष्ट इनकार कर चुकी हैं, नारी सेवा के लिए सब प्रकार उपयुक्त हो सकती हैं। वे शिक्षित नारी, जिन्हें गुजारे में कठिनाई नहीं है, उन्हें नौकरी की ओर नहीं, नारी सेवा जैसे जीवन को धन्य बनाने वाले महान कार्य की ओर आकर्षित होना चाहिए।

नारी अग्रिम मोर्चे पर खड़ी जरूर होगी, पर उसे इसकी सफल भूमिका निभा सकने की स्थिति तक पहुँचाने के लिए पुरुष को अपना योगदान देना होगा। उन्हें अपने घर की महिलाओं को कार्यक्षेत्र में उतारने के लिए प्रोत्साहन, प्रशिक्षण, मार्गदर्शन, अवकाश देने से लेकर साधन जुटाने के लिए उसे परदे के पीछे रहकर पूरा-पूरा योगदान करना होगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्यसनमुक्ति, कुरीति उन्मूलन आंदोलन

"साधनों को व्यसन से बचाएँ—सृजन में लगाएँ"

(१) तंबाकू/गुटका

१. भारत वर्ष में ९ से १० लाख व्यक्ति प्रतिवर्ष नशे के कारण मरते हैं। स्थिति न बदली, तो मरने वालों की संख्या २०२० में एक करोड़ प्रतिवर्ष हो जाएगी।

२. तंबाकू की खेती ४ लाख ५० हजार हेक्टेयर भूमि में होती है। जिससे लगभग १ खरब बीड़ी तथा १० अरब सिगरेट प्रतिवर्ष बनती हैं। इतनी भूमि में ३० लाख गायों के लिए चारा वर्षभर के लिए हो सकता है या ४० लाख टन अनाज प्रतिवर्ष हो सकता है। (कुल राष्ट्रीय अन्नोत्पादन का २ प्रतिशत)

३. पकड़े गए अपराधियों में ८५ प्रतिशत नशेबाज होते हैं।

४. ९० प्रतिशत बच्चे अपने माता-पिता, भाई, मित्र से धूम्रपान सीखते हैं।

५. करोड़ों रुपये का धूम्रपान प्रतिवर्ष भारत में होता है। इससे भारतीय सेना का वार्षिक खरच तीन वर्ष तक चलाया जा सकता है या ७० लाख प्राइमरी स्कूल चलाए जा सकते हैं या भारत के प्रत्येक गाँव में १० किलोमीटर सड़क का निर्माण किया जा सकता है।

६. प्रतिवर्ष मुख कैंसर से एक लाख अस्सी हजार व्यक्तियों की मृत्यु होती है। ६० प्रतिशत मुख कैंसर गुटकों के कारण एवं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

२९ प्रतिशत तंबाकू के कारण पाए गए हैं। आशंका है कि कुछ ही वर्षों में मुख कैंसर से मरने वालों की संख्या १० लाख हो जाएगी।

७. तंबाकू के कारण कंपनियों के कर्मचारियों पर चिकित्सा खरच ४५०० करोड़ रुपयों का प्रतिवर्ष होता है।

८. विभिन्न व्यसनों के कारण प्रतिवर्ष रोगी संख्या ६० लाख तथा मरने वालों की संख्या ९ लाख है।

९. एक पैकेट सिगरेट से ८ वर्ष तथा दो पैकेट पीने से १८ वर्ष आयु की कमी होती है तथा ५ रुपए की सिगरेट प्रतिदिन पीने से ४० साल में कई लाख रुपयों का नुकसान होता है।

१०. धूम्रपान करने वाली महिलाओं में गर्भपात दो गुना हो जाता है एवं उनके बच्चों का वजन ८ प्रतिशत कम होता है। फेफड़े के ३० प्रतिशत रोगी केवल धूम्रपान से मरते हैं।

११. दुनिया में ९० करोड़ लोग नशे का सेवन करते हैं तथा पकड़े गए अपराधियों के ८५ प्रतिशत नशेबाज होते हैं।

(२) शराब

१. भारत में १५ करोड़ व्यक्ति शराब का सेवन करते हैं।

२. शराबी के एक्सीडेंट की संभावना ७ गुना अधिक हो जाती है तथा २५ प्रतिशत सड़क दुर्घटनाओं का कारण शराब होती है।

३. भारत में शराब से ४ लाख मौतें एवं ५० हजार दुर्घटनाएँ प्रतिवर्ष होती हैं।

४. अमेरिका में हर घंटे ११ से अधिक व्यक्तियों की मौत और १०३० से अधिक लोग विकलांग होते हैं।

५. आँकड़े बताते हैं कि १९९९ में शराब सेवन से १२ करोड़ श्रमिक घंटों की हानि हुई।

६. अमेरिका में शराब के कारण ३० प्रतिशत सड़क दुर्घटना में मृत्यु, ५२ प्रतिशत हत्याएँ, २८ प्रतिशत आत्महत्याएँ, ३५ प्रतिशत असावधानी जनित मृत्यु तथा ३५ प्रतिशत तलाक होते हैं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

७. रूस में शराब के कारण ७० प्रतिशत बलात्कार, ९० प्रतिशत सड़क, कारखाना दुर्घटना एवं ६६ प्रतिशत कानून उल्लंघन होता है।

८. फ्रांस में शराब के कारण ६३ प्रतिशत दुर्घटनाएँ एवं ३९ प्रतिशत हत्याएँ होती हैं।

(३) चाय, काफी, कोला

१. एक कप कॉफी में २ से ४ ग्रेन केफिन व चाय में १ से २ ग्रेन केफिन नामक विष होता है, जो दिमाग की नर्वस सिस्टम, दिल व पेट को बहुत नुकसान पहुँचाता है।

२. नियमित २ कप कॉफी से पेन्क्रियाटिक कैंसर की संभावना ८ गुना बढ़ जाती है।

३. नियमित कोला के सेवन से ५० प्रतिशत अल्सर की संभावना बढ़ जाएगी।

आशा की किरणें—

१. १.१.२००० को १५ लाख ब्रिटेनवासियों ने नई शताब्दी के उपलक्ष्य में धूम्रपान छोड़ा।

२. अमेरिका में ५ करोड़ २० लाख ने धूम्रपान छोड़ा, जिसमें ३ लाख डॉक्टर थे।

३. गायत्री परिवार के कार्यक्रमों में देवदक्षिणा कार्यक्रम के अंतर्गत भी लाखों लोगों ने संकल्पपूर्वक नशे छोड़े हैं।

४. प्रज्ञा चाय ने सभी प्रकार के नशों का एक स्वस्थ विकल्प बनने का प्रयास किया है।

गाँजा, भाँग, चरस, मार्फिन, हशीश, एल.एस.डी., स्मैक, ब्राउन सुगर जैसे नशों के विरुद्ध आंदोलन चल रहा है। इसके अतिरिक्त मांसभक्षण, जुआ, चोरी, बेईमानी, भ्रष्टाचार, आलस्य, अशिष्टता, स्वार्थपरता, अपव्यय, द्वेष, दुर्भाव, कलह, शोषण, अनाचार, अवांछनीयताएँ, भ्रांतियाँ जैसी दुष्प्रवृत्तियाँ तथा जेवर, बड़ी दावतें, जूठन छोड़ना, भूतपलीत, भाग्यवाद, बाल-विवाह, अनमेल विवाह,

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

छूआ-छूत, परदाप्रथा, पशुबलि, भिक्षावृत्ति आदि कुरीतियों को दूर करने का आंदोलन चल रहा है।

सामाजिक कुरीतियाँ

१. महँगे विवाह—

१. भारत में प्रतिवर्ष ७५ लाख विवाह होने का अनुमान है। दोनों पक्ष चालीस-पचास हजार से लेकर पाँच-सात लाख रुपया तक खरच करते हैं। १००-२०० करोड़ के विवाह भी देखने में आए हैं। बीस हजार की बरबादी का भी औसत हो तो कुल बरबादी एक खरब ५० अरब की बैठती है। इस राशि से भारत के प्रत्येक गाँव में एक प्राइमरी पाठशाला बन सकती है या प्रत्येक गाँव में एक किलोमीटर सड़क बन सकती है या भारत के प्रत्येक सैनिक को बुलैट प्रूफ जाकट दी जा सकती है। विवाह की रस्में भी एक से अधिक हैं, जो खरचा बढ़ाती हैं।

२. विवाहों में जितने लोग एकत्रित होते हैं, उतने समय और श्रम का हिसाब लगाया जाए, तो बुद्धि चकरा जाती है। एक विवाह में पचास मानव दिवस की बचत भी की जा सके तो ३७.५ करोड़ मानव दिवस का साधारण मूल्य भी बीस अरब बैठता है। बीस विश्वविद्यालय स्थापित करने के लिए यह रकम पर्याप्त है।

३. विवाहों में खान-पान की असावधानी से कितने ही लोग बीमार पड़ते हैं और उनकी चिकित्सा में भी व्यय होता है।

४. कितने ही विवाहों में झगड़े, गोली अचानक चल जाने से मृत्यु की घटनाएँ आएदिन सुनने में आती रहती हैं।

२. मृतक भोज—

अभी वर्ष २००० में ही राजस्थान के एक गाँव में इस प्रचलन के कारण एक परिवार ने अपने परिजन के मृतक भोज में तीस लाख रुपया खरच किया। अब जन्म हुआ है तो सबकी मृत्यु होनी निश्चित है। एक अनुमान के अनुसार प्रतिवर्ष यह खरच भी १०,००० करोड़ से कम नहीं है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

३. महँगे और अधिक वस्त्र—

तन ढकने, सरदी से बचने के लिए वस्त्रों की आवश्यकता तो है, लेकिन आजकल इस आवश्यकता को भी प्रतिष्ठा से जोड़ दिया गया है। एक ओर देश की बड़ी संख्या तन नहीं ढक पा रही है, तो दूसरी ओर संपन्न वर्ग का बड़ा हिस्सा इस विषय में फजूलखरची में संलग्न है। इससे धन और श्रम तो व्यर्थ जाता ही है, समाज में समरसता भंग होती है, ईर्ष्या को जन्म मिलता है। प्रदर्शन-प्रियता, भोजन-सत्कार में जन्मदिन पर महँगा उपहार देना, स्वागत-सत्कार में महँगे एवं अनुपयोगी पेय प्रस्तुत करना भी अब कुरीति का रूप ले चुका है।

कैसे छूटें व्यसन—कैसे मिटें कुरीतियाँ?

कुछ लोग तो जानकारी ही नहीं रखते कि इन व्यसनों एवं कुरीतियों के कितने भयंकर दुष्परिणाम होते हैं। इस जागरूकता के लिए समाज के आदर्शनिष्ठ, प्रामाणिक व्यक्तियों द्वारा व्यापक अभियान चलाया जाना चाहिए। दीवार लेखन, पुस्तकें, सभा, सत्संग, नाटक, वीडियो, रेडियो, टेलीविजन, व्यक्तिगत जनसंपर्क का व्यापक उपयोग किया जाना चाहिए।

धार्मिक आयोजनों में, पर्वों पर दबाव डालकर संकल्प कराए जाने चाहिए। रिश्तेदारी आदि में इन जानकारियों को (वर के संबंध में) माँगना चाहिए। धार्मिक स्थलों, पार्कों, बसों, रेलों व कार्यालयों में नशा प्रतिबंधित होना चाहिए।

अधिक लोग ऐसे हैं जो व्यसन और रीति-रिवाजों के परिणामों से पूर्णत: परिचित हैं, लेकिन फिर भी व्यवहार में परिवर्तन नहीं ला पाते। डॉक्टरों को नशे के बारे में खूब मालूम है। इसका एक ही कारण है, आवश्यक मनोबल का न होना। इस प्रकार मनुष्य की सभी समस्याओं के मूल में अज्ञान या अशक्ति ही है। इस समस्या को सुलझाने के लिए भारतीय ऋषियों ने आध्यात्मिक जीवन पद्धति अपनाने पर जोर दिया है और धर्मतंत्र का कलेवर खड़ा किया गया है, उसी को फिर से जाग्रत, जीवंत बनाने की आवश्यकता है।

मुद्रक : युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org